पाठ - 25

FUBTJ6

भारत के महान शिक्षाविद्

हमारे देश में समय-समय पर अनेक विद्वान पैदा होते रहे हैं। इन विद्वानों ने ज्ञान के विविध क्षेत्रों में अनेक कार्य किए। सामाजिक तथा शिक्षा के क्षेत्र में भी अनेक मनीषियों ने अमूल्य योगदान दिया है। ऐसे ही शिक्षाविदों में पंडित मदनमोहन मालवीय तथा सर सैय्यद अहमद खाँ का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है।

पंडित मदन मोहन मालवीय

पंडित मदन मोहन मालवीय का जन्म 25 दिसम्बर 1861 को इलाहाबाद में हुआ। इनके पिता बृजनाथ मालवीय ने इनकी प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था 'धर्म ज्ञानोपदेश पाठशाला' में करायी। इसके बाद इन्हें 'विद्याधर्म प्रवर्धिनी' में प्रवेश दिलाया गया। मदन मोहन अत्यंत मेधावी छात्र थे। अतः इन्हें शिक्षकों का भरपूर स्नेह मिला। इसी विद्यालय के शिक्षक देवकीनंदन जी की मालवीय के व्यक्तित्व को निखारने में प्रमुख भूमिका रही। इन्हीं की प्रेरणा से वे एक कुशल वक्ता बने।

मालवीय जी के घर की आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी। इनके पिता बड़ी कठिनाई से इन्हें स्नातक तक शिक्षा दिला पाये। घर की दशा को देखते हुए मालवीय जी ने सरकारी हाईस्कूल में शिक्षक के पद पर कार्य करना आरंभ कर दिया। अपनी अद्भुत वक्तृता एवं शिक्षण शैली के कारण वे अच्छे एवं लोकप्रिय शिक्षक के रूप में विख्यात हो गए।

मालवीय जी ने भारतीय समाज की गरीबी को समीप से देखा था। आरंभ से ही उनके मन में समाज-सेवा की भावना भर गई थी। वे लोगों की सहायता विभिन्न प्रकार से करते थे। उनका दृढ़ मत था कि भारत की गरीबी तभी दूर हो सकती है जब यहाँ की जनता शिक्षित और प्रबुद्ध हो तथा उनका अपना शासन हो। मालवीय जी देशभक्ति को धर्म का ही एक अंग मानते थे। वे धार्मिक संकीर्णता एवं साम्प्रदायिकता के घोर विरोधी थे। वे देश की प्रगति एवं उत्थान के लिए सर्वस्व त्याग एवं समर्पण की भावना के पोषक थे।

सन् 1902 में संयुक्त प्रान्त (उत्तर प्रदेश) एसेम्बली के चुनाव में मालवीय जी सदस्य निर्वाचित हुए। अपनी सूझ-बूझ, लगन और निष्ठा के कारण उन्हें यहाँ भी पर्याप्त सम्मान मिला। सन् 1910 से 1920 तक वे केन्द्रीय एसेम्बली के सदस्य भी रहे। 1931 ई0 में लंदन में आयोजित द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया। यहाँ उन्होंने खुलकर भारतीय पक्ष को सम्मेलन में प्रस्तुत किया। उन्होंने सम्मेलन में साम्प्रदायिकता का विरोध किया और सामाजिक सद्भाव तथा समरसता पर जोर दिया।

मालवीय जी देश से निरक्षरता को दूर करने और शिक्षा के व्यापक प्रसार को देश की उन्नति के लिए आधारशिला मानते थे। अतः उन्होंने शिक्षा पर विशेष बल दिया। वे स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। शिक्षा सम्बन्धी अपनी धारणा को साकार करने के लिए उन्होंने एक महान विश्वविद्यालय की स्थापना की योजना बनाई। इसके लिए उन्होंने देशवासियों से धन माँगा।

अपनी सामथ्र्य के अनुसार लोगों ने इस पुण्य कार्य में सहयोग किया। तत्कालीन काशी नरेश ने विश्वविद्यालय के लिए पर्याप्त धन तथा भूमि दी। अपनी ईमानदारी, लगन एवं परिश्रम के कारण उन्हें इस कार्य में सफलता मिली। सन् 1918 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी) की स्थापना की गई। यह विश्वविद्यालय आज भी भारत के विश्वविद्यालयों में प्रमुख है। जितने विषयों के अध्ययन की यहाँ व्यवस्था है उतनी एक साथ शायद ही कहीं हो। वे राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि बिना हिंदी ज्ञान के देश की उन्नति सम्भव नहीं है।

पूरे जीवन अथक परिश्रम करने वाला भारत माँ का यह सपूत 1946 ई0 में सदा के लिए सो गया। अपनी कीर्ति के रूप में मालवीय जी भारतीयों के मन में आज भी जीवित हैं।

सर सैयद अहमद खाँ

सर सैयद अहमद खाँ का जन्म दिल्ली के एक समृद्ध एवं प्रतिष्ठित परिवार में 17 अक्टूबर 1817 ई0 को हुआ था। इनके पिता का नाम मीर मुत्तकी तथा माता का नाम मीर अजीजुन्निसा बेगम था। इनकी शिक्षा अरबी, फारसी, हिंदी, अंग्रेजी के अनेक लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों द्वारा हुई। इन्होंने ज्योतिष, तैराकी तथा निशानेबाजी का भी अभ्यास किया।

सैयद अहमद खाँ पहले मुगल दरबार में नौकरी करते थे। बाद में मुगल दरबार छोड़कर वह अंग्रेजों की नौकरी करने लगे। विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए वे सन् 1876 ई0 में बनारस के स्माल काजकोर्ट के जज पद से सेवानिवृत्त हुए। अंग्रेजों ने इनकी सेवा एवं निष्ठा को देखते हुए इन्हें, 'सर' की उपाधि से विभूषित किया।

अहमद साहब मितव्ययी थे। वे अपने वेतन का अधिकांश भाग अपनी माँ के पास भेज देते थे ताकि परिवार का खर्च चलता रहे। इन्होंने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम को पास से देखा था और इस पर एक पुस्तक 'असबाबे बगावते हिन्द' (भारतीय विद्रोह के कारण) लिखकर यह बताया कि इस विद्रोह के कारण क्या थे। उनकी दृष्टि में विद्रोह का मूल कारण भारतीयों को कानून बनाने से दूर रखना था। वे एक विचारक और चिन्तक थे उन्होंने देखा कि भारतीय मुस्लिम समाज दिशा-निर्देश के अभाव में निरन्तर पिछड़ता जा रहा है। वे इस्लाम धर्मानुयायियों में बौद्धिक चेतना प्रदान कर उन्हें नयी दिशा देना चाहते थे। इसके लिए इन्होंने 'तहजीबुल एखलाक' नामक पत्रिका निकाली। उनका कहना था कि धर्मशास्त्रीय ज्ञान के साथ-साथ आधुनिक विषयों और विज्ञान का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। यही कारण था कि उन्होंने उस समय प्रचलित पारम्परिक शिक्षानीति का विरोध किया। वे मानते थे कि शिक्षा का उद्देश्य छात्र की बौद्धिक चेतना को उजागर करना एवं उसके व्यक्तित्व का निखार करना है।

शिक्षा के विकास के लिए सैयद अहमद खाँ ने अनेक संस्थाएँ खोलीं। इनमें मुरादाबाद का एक फारसी मदरसा, साइंटिफिक सोसाइटी गाजीपुर, साइंटिफिक सोसाइटी अलीगढ़ आदि प्रमुख हैं। मुस्लिम समाज में आधुनिक शिक्षा को लोकप्रिय बनाने के लिए उन्होंने

'मोहम्मडन एजुकेशनल कान्फ्रेन्स' की भी स्थापना की। सन् 1873 में एक अन्य समिति का गठन किया गया जिसका उद्देश्य अलीगढ़ में एक कॉलेज की स्थापना करना था। इस कॉलेज के लिए समाज के सभी वर्ग के लोगों ने चन्दा दिया। इस प्रकार 1875 ई0 में 'मोहम्मडन एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज' की अलीगढ़ में स्थापना हुई। यही कॉलेज आगे चलकर 'अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय' के नाम से विकसित हुआ। भारतीय समाज के लिए सैयद अहमद खाँ की यह अमूल्य देन है।

मुक्त विचारों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, साम्प्रदायिक सौहार्द के कारण उनका सर्वत्र सम्मान होता था। अंग्रेज सरकार ने प्रसन्न होकर इन्हें 'नाइट कमाण्डर आफ स्टार आफ इण्डिया' (के0 सी0 एस0 आई0) की उपाधि तथा एडिनबरा विश्वविद्यालय ने 'डाक्टर आफ लॉ' की मानद उपाधि से सम्मानित किया। 25 मार्च सन् 1898 ई0 को इस शिक्षाविद् का निधन हो गया।

अभ्यास

1. मालवीय जी की आरम्भिक शिक्षा कहाँ हुई ?

2. द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में मालवीय जी ने किस बात का विरोध किया ?

3. मालवीय जी ने शिक्षा के प्रसार के लिए क्या किया ?

4. सर सैयद अहमद खाँ के अनुसार 1857 ई0 के विद्रोह का कारण क्या था ?

5. मुस्लिम समाज के उत्थान के लिए सर सैयद अहमद खाँ ने कौन-कौन से कार्य किए ?

6. शिक्षा के उत्थान में सैयद अहमद खाँ का क्या योगदान है ?

7. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

   क. ..... की मालवीय के व्यक्तित्व को निखारने में प्रमुख भूमिका रही।

   ख. मालवीय जी का मानना था कि ..... धर्म का ही एक अंग है।

ग. सैयद अहमद खाँ समझते थे कि समाज तब सुधर सकता है जब ..... के क्षेत्र में नया दृष्टिकोण अपनाया जाए।

घ. सैयद अहमद खाँ की भारत को सबसे बड़ी देन ..... है।

योग्यता विस्तार-

- मालवीय जी के राजनैतिक कार्यों के विषय में जानकारी कीजिए।
- सैयद अहमद खाँ के विचारों को सूचीबद्ध कीजिए।